जुलाई 2020 वर्ष : 3 अंक : 10

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक समाचार, जुलाई 2020 देश के समस्त मछुआरों और प्रगतिशील कृषकों को समर्पित है जिनके अथक प्रयासों के कारण आज हमारा देश मछली पालन में एक अन्यतम स्थान प्राप्त कर पाया है। साथ ही मुझे यह बताते अत्यंत हुए हर्ष हो रहा है कि संस्थान में 10 जुलाई 2020 को 'राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस' मनाने जा रहा है। मत्स्य पालकों और इस क्षेत्र से जुड़े समस्त व्यक्तियों, उद्यमीयो, योजनाकारो और शोध छात्रो जैसे मात्स्यिकी से जुडे सभी के लिए इस पावस दिवस का एक विशेष महत्व है। यह दिवस प्रेरित प्रजनन के जनक डा. हीरालाल चौधरी की पहली मत्स्य प्रजनन की सफलता के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। अबतक इस विशेष दिन को संस्थान बहुत ही धूमधाम से मनाता आ रहा है। इस दिन मात्स्यिकी से जुड़े बहुत सारे किसानों, मत्स्य पालकों, प्रगतिशील मत्स्य कृषकों, मात्स्यिकी विशेषज्ञों, मीडिया कर्मियों आदि को आमंत्रित किया जाता था और देश के कुछ प्रगतिशील मत्स्य कृषकों को सम्मानित किया जाता था। इस वर्ष भी पूर्व वर्षो के तरह किसानों तथा संस्थान के वैज्ञानिकों के बीच पारस्परिक संवाद आयोजित किया जाता था जिससे उन्हें अपनी समस्याओं का नैदानिक उपाय मिल सके। यूं कहिए कि 10 जुलाई का यह पूरा दिन इन किसानों के लिए समर्पित रहता है। पर इस वर्ष कोरोना महामारी के कारण इस कार्यक्रम में थोड़ा बदलाव किया गया है। इस वर्ष का 'राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस' के मुख्य बिन्दु तो लगभग वैसे ही रहने वाले है पर वर्चुअल मोड में। इस दिन देश के समस्त मत्स्य किसानों, मत्स्य पालकों, प्रगतिशील मत्स्य कृषकों, मात्स्यिकी विशेषज्ञों, राज्य सरकारों के मात्स्यिकी अधिकारीयो और मीडिया कर्मियों आदि को वीडियो कोन्फ्रेंसिंग के माध्यम से इस कार्यक्रम से जोड़ा जायगा ताकि वे अपने विचार साझा कर सकेंगे।

मैं आप सभी को इस विशेष दिवस की हार्दिक बधाई देता हूँ और आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ ।

धन्यवाद,

विकास

रैंचिंग, मत्स्य टैगिंग एवं डॉलफिन मछली पर जागरूकता कार्यक्रम

गंगा मात्स्यिकी के पुनरुत्थान और इसमें कम होती मछलियों की संख्या की वृद्धि हेतु नमामि गंगे परियोजना के तहत भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थली मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिनांक 11 जून से लेकर 16 जून, 2020 तक रैंचिंग, मछलियों की टैगिंग एवं डॉलफिन मछली पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के तहत पश्चिम बंगाल के नवद्वीप, कालना, त्रिवेनी एवं बैरकपुर के विभिन्न गंगा घाटों में रोहू, कतला, एवं मृगल मछलियों के दो लाख अंगुलिकाओ को गंगा में छोड़ा गया जिसका उद्देश्य था कि ये मछलियां बड़ी होकर प्रजनन करेंगी जिससे गंगा में पूर्ववत उपलब्ध मछलियों की संख्या को फिर से गंगा में बहाल किया जा सकेगा एवं उनकी संख्या में भी वृद्धि हो सकेगी। मत्स्य अंगुलिकाओ को छोड़ने के साथ-साथ मछुआरों को जागरूक किया गया कि वो इन मत्स्य अंगुलिकाओ को ना पकड़े जिससे वे परिपक्व होकर प्रजनन करें और मछलियों की संख्या में वृद्धि हो। इसी प्रकार, मछुआरें डॉलफिन मछली को भी किसी प्रकार की हानि न पहुचायें आदि। इसके साथ मछलियों की टैगिंग कि गईं जिसका उद्देश्य इन मछलियों के अभिगमन संबंधी तथ्यों का अध्ययन करना है जैसे मछलियां कितनी दुरी तक प्रवास करती हैं, आदि। इस कार्यक्रम के समापन पर संस्थान के निदेशक एवं परियोजना प्रधान (principal investigator) डॉ. बसंत कुमार दास ने कहा कि "मछलियां गंगा से जुड़े लाखों मत्स्य पालकों के जीविकोपार्जन का स्रोत है, साथ ही साथ यह गंगा के प्रदूषण को भी कम करने में लाभदायक हैं। गंगा नदी में मछलियों की संख्या को बढ़ाने हेतु नमामि गंगे परियोजना के तहत देश के 5 राज्यों (बिहार, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, झारखंड एवं पश्चिम बंगाल) में गंगा में मछलियों को छोड़

रहे हैं और साथ हीं मछुआरों से यह आग्रह करते हैं कि वो मछलियों को प्रजनन करने तक परिपक्व होने दें जिससे गंगा में मछलियों की संख्या को बढ़ाया जा सके, और स्वच्छ एवं खुशहाल गंगा नदी की परिकल्पना को जल्द से जल्द परिपूर्ण किया जा सके। रेंचिंग कार्यक्रम एनएमसीजी टीम के सदस्यों की सक्रिय सहायता से और नमामि गंगा परियोजना के समन्वयक डॉ. रन्जन कुमार मन्ना, श्री एच. एस. स्वैन और एम. एच. रामटेके और शोध छात्रों द्वारा किया गया।

'নমামি গঙ্গে' প্রকল্পে গঙ্গায় মাছের চারা

कोलकाता, गुरुवार 18.06.2020 प्रभात खबर

गंगा में छोड़ा गया मछली का चारा

केंद्रीय अंतःस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने चलाया कार्यक्रम

संस्थान ने 5 लाख रूपए मुख्यमंत्री के राहत कोष में प्राकृतिक आपदा आम्फान के लिए किया दान

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान सदैव से ही पूरे देश भर में मात्स्यिकी से जुड़े लोगों की आजीविका विकास के लिए सचेष्ट रहा है। अपनी 74 वर्षों की लंबी यात्रा में संस्थान का मत्स्य पालन क्षेत्र से जुड़े आपदाग्रस्त मछुआरों की मदद करने में हमेशा आगे रहा

हैं, चाहे आईला हो, भुवनेश्वर और पुरी में आये फानी, या फिर फ्रेज़रगंज, पश्चिम बंगाल में बुलबुल हो। दिनांक 20 मई 2020 को पश्चिम बंगाल में आए विनाशकारी चक्रवात, आम्फान के कारण सुंदरबन और फ्रेज़रगंज के मछुआरों को गंभीर परिणाम झेलने को मिले हैं। आपदा प्रभावित किसानों की मदद के लिए संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने संस्थान के वैज्ञानिकों और अन्य कर्मचारियों के एक दिन के वेतन के योगदानस्वरूप 5 लाख रुपये का चेक पश्चिम बंगाल मुख्यमंत्री राहत कोष में सौंप कर इस विपदा में अपना योगदान दिया है। साथ ही डॉ. दास ने माननीया मुख्यमंत्री के कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र के सलाहकार, श्री प्रदीप मजूमदार के साथ पश्चिम बंगाल में मात्स्यिकी के पुनर्स्थापन की योजना के बारे में विस्तृत चर्चा की। संस्थान पश्चिम बंगाल में खुला जल और आर्द्रभूमि मात्स्यिकी के विकास हेतु तकनीकी सहायता प्रदान करने के साथ कॉलेज के छात्रों और ग्रामीण युवाओं को भविष्य में मत्स्य पालन को आजीविका के साधन के रूप में अपनाने की दिशा में सहयोग प्रदान करेगा, जिससे पश्चिम बंगाल के मत्स्य पालन क्षेत्र के आर्थिक विकास को और भी सशक्त किया जा सके।

प्रयागराज में गंगा नदी में उन्नत अंगुलिमीनों को छोड़ा गया

दिनांक 20 जून, 2020 को प्रयागराज के संगम क्षेत्र में, गंगा नदी में भारतीय प्रमुख कार्प (IMC) के 5000 उन्नत अंगुलिकाओं को प्रवाहित किया गया। नमामि गंगे परियोजना के तहत संस्थान के प्रयागराज केंद्र द्वारा इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय केंद्र इलाहाबाद के वैज्ञानिक तथा प्रभारी डॉ. डी. एन. झा ने सभी दर्शकों को विस्तार से रैंचिंग का महत्व समझाया और

मछुआरा समुदाय को प्रजनन अवधि के दौरान इन ब्रूडर मछलियों को नहीं पकड़ने का सुझाव दिया। उन्होंने दर्शकों को संस्थान द्वारा गंगा नदी की महत्वपूर्ण मछलियों के संरक्षण और पुनर्स्थापना के लिए किए गए कार्यों के बारे में भी बताया। श्री इरफानुलह खान, उत्तर प्रदेश मत्स्य विभाग से मत्स्य निरीक्षक इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। उन्होंने गंगा नदी की मछलियों और मछुआरों से संबंधित सरकारी योजना के बारे में संक्षेप में बताया। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री राजेश शर्मा, सह-समन्वयक, गंगा विचार मंच / नमामि गंगे ने इसकी भूमिका और नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत हो रहे कामों पर प्रकाश डाला।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- पश्चिम बंगाल के 21 आर्द्रभूमियों के आंकड़ों से यह पता चलता है कि पालन आधारित मत्स्य कृषि से इन आर्द्रभूमियों में औसतन मछलीयों की उपज 1083 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष है। खुले आर्द्रभूमि की ऊपज (864 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष) की तुलना में बंद आर्द्रभूमि की ऊपज (1165 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष) औसतन अधिक थी। गंगा बेसिन के निचले भाग की आर्द्रभूमि में तीस्ता-तोरसा बेसिन की तुलना में मछली की उपज अधिक दर्ज की गई।

- *पंगासियानोडोन हाइपोथलमस* मत्स्यों के अविकसित अंगुलिकाओं के विकास का मूल्यांकन किया गया जिन्हे चार संचयन घनत्वों, 25 अंगुलिका प्रति घन मी., 35 अंगुलिका प्रति घन मी., 45 अंगुलिका प्रति घन मी. और 55 अंगुलिका प्रति घन मी. के हिसाब से संचयित किया गया था। अध्ययन में यह देखा गया है कि अधिकतम विकास 45 अंगुलिका प्रति घन मी. वाले संचयन से हुआ है जबकि 55 अंगुलिका प्रति घन मी. वाले संचयन घनत्व में सबसे कम था। अन्य संचयन घनत्व में अंगुलिकाओं के विशिष्ट विकास दर, आहार का उपयोग और मछलियों द्वारा भोजन को ठीक प्रकार से ग्रहण आदि अधिक संचयन घनत्व (55 अंगुलिका प्रति घन मी.) की तुलना में अधिक पाया गया। इस परीक्षण में यह देखा गया कि अंगुलिकाओं का विकास 45 अंगुलिका प्रति घन मी. वाले संचयन घनत्व में अच्छा होता है।

- ताप्ती नदी के निचले भाग, सिंगलकाच में मानसून पश्चात सैंपलिंग के दौरान यह देखा गया कि मीठे पानी की मछलियां जैसे *लेबिओ गोगुट, ओरियोक्रोमिस नाईलोटिकस, सिस्टोमस सराना* और *ज़ेनेंटोडोन कैंसिला* के सिर और पूरे शरीर में परजीवी, एलिट्रोपस्टिपस एच. मिल्ने एडवर्ड्स 1840 का संक्रमण पाया गया।

- कावेरी नदी के सर्वेक्षण में पूरे खंड में 30 विभिन्न प्रकार के मछली पकड़ने के गियर दर्ज किए गए हैं। इस गियरों में 'कछावलाई' का उपयोग ग्रैंड एनीकट में बैराज के नीचे से बड़े पैमाने पर किया जाता है। यह एक ड्राइव-इन स्टेक नेट गियर है जो तरुण मछलियों के ऊपरी क्षेत्र में अभिगमन को बाधित करता है। ऐसे विनाशकारी गियर का प्रयोग तत्काल बंद कर देना चाहिए जिससे इन तरुण मछलियों को बचाया जा सके।

- ई-मत्स्य (eMatsya) ऐप की सहायता से अप्रैल 2016 से मार्च 2019 के दौरान तुंग जलाशय से एकत्र मत्स्य आंकड़ों को अनुमानित किया गया। इस जलाशय से अनुमानित तौर पर कुल 39.4 टन (2016-17), 32.4 टन (2017-18) और 33.5 टन (2018-19) मछलियों को पकड़ा गया। इस मत्स्य पकड़ में सबसे अधिक रोहू (21.3 प्रतिशत) मछली पायी गयी। इसके बाद, कैटफ़िश (20.7 प्रतिशत), कतला (11.1 प्रतिशत), मृगल (6.4 प्रतिशत) और विविध मछलियों (40.5 प्रतिशत) की अधिकता देखि गयी ।

- बैरकपुर (पश्चिम बंगाल) में गंगा नदी में रोहू, कतला और मृगल की 100 से अधिक मछलियों को टैग करके नदी में छोड़ा गया जिससे उनकी उत्तरजीविता, वृद्धि, और अभिगमन प्रकृति का अध्ययन कर के सूचनाएँ एकत्र की जा सके।

- नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत, पश्चिम बंगाल में गंगा नदी के पांच अलग-अलग स्थानों, नबद्वीप, कलना, बालागढ़, त्रिबेनी और बैरकपुर में कुल 2.2 लाख भारतीय प्रमुख कार्प प्रजातियों की अंगुलिकाओं को प्रवाहित किया गया।

- गंगा नदी के गोमुख और सागर द्वीप में संगम बिंदु पर भू-स्थानिक तकनीक का उपयोग द्वारा 3795 मछुआरा गाँवों का मानचित्रीकरण किया गया। इससे अंतर्स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के जल प्रबंधकों के लिए रणनीतिक विकास और नीति निर्माण के लिए रूपरेखा विकसित करने में सरलता होगी।

संस्थान ने ओडिशा के अनुसूचित जाति के मछुआरों की आजीविका संवर्धन के लिए कोरोना स्थिति में सालिया जलाशय को अपनाया

संस्थान ने ओडिशा सरकार के मत्स्य विभाग के परामर्श से सालिया जलाशय में मत्स्य वृद्धि कार्यक्रम शुरू किया है। इस जलाशय पर लगभग 200 से अधिक अनुसूचित जाति के परिवारों की आजीविका निर्भरशील हैं। कोरोना वायरस के प्रकोप से पहले, संस्थान ने उत्पादन बढ़ाने के लिए जलाशय में उन्नत अंगुलिकायों को विकसित करने के लिए नर्सरी में उनका पालन शुरू किया है। इस जलाशय में कम से कम 30 टन से 60 टन तक उत्पादन में सुधार के लिए कार्यक्रम शुरू किया गया था। इस जलाशय के दो एकड़ के नर्सरी क्षेत्र में फ्राई को स्टॉक किया गया था, जिनमें 1.0 लाख भारतीय प्रमुख कार्प थे। अक्टूबर 2019 में मछली के बीज का संचयन किया गया था। कोविड -19 महामारी में लॉकडाउन के दौरान, संस्थान के वैज्ञानिक/ कर्मचारी ने मछुआरों के साथ लगातार संपर्क रहे और उन्हें नर्सरी की देखभाल करने और नियमित रूप से मछलियों को आहार संबंधी निर्देश दिये गए। नर्सरी में इन मछलियों के बीजों के पालन का उद्देश्य अंगुलिकाओं का विकास करना है। दिनांक 21 और 22 मई 2020 को संस्थान ने जलाशय में मत्स्य बीजो के संचयन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दिन सालिया जलाशय में भारतीय प्रमुख कार्प के 30 ग्राम वाली 25000 अंगुलिकाओं को छोड़ा गया। इस जलाशय में अतिरिक्त 10 टन मछली उत्पादन प्राप्त करने का अनुमान किया गया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कोरोना महामारी के बाद मछुआरों की आय में वृद्धि करना है। इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन से लगभग 30.00 लाख रुपये की अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। कार्यक्रम की योजना और परिकल्पना संस्थान के निदेशक डॉ.बि. के. दास ने की थी। कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए मछुआरों के बीच मास्क और सैनिटाइज़र वितरित किया गया और सभी गतिविधियों का संचालन सामाजिक दूरी को ध्यान में रखकर किया गया था।

• संस्थान ने अनुसूचित जनजातीय कार्यक्रम के तहत पश्चिम बंगाल के चामता बील के मछुआरों की आजीविका बढ़ाने के लिए एक पहल

पश्चिम बंगाल के, उत्तर 24 परगना के चामता बील के मछुआरों को संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में अनुसूचित जनजातीय कार्यक्रम के तहत तकनीकी सहायता के अलावा पेन, मत्स्य आहार, मत्स्य बीज और फिशिंग बोट (कोरेकल) जैसे मत्स्य पालन करने के साधन प्रदान किए गए। चामता बील की मछलियों का प्रबंधन चामता फिशरमेन कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड ने किया था। कोऑपरेटिव सोसाइटी में 248 सदस्य हैं, जिनमें से 219 अनुसूचित जाति (एससी) से हैं और 36 महिलाएँ हैं। बील के लिए संचयन

सामग्री के रूप में मछली के बीज को बढ़ाने के लिए पेन में मछली पालन तकनीक का सफल प्रदर्शन किया गया। अनुसूचित जनजातीय कार्यक्रम के तहत पेन में मछली पालन के लिए आवश्यक सभी सुविधाएं संस्थान द्वारा चामता के मछुआरों को प्रदान की गई। भारतीय प्रमुख कार्प -18,000, बाटा (*लेबियो बाटा*) -10,000 और सराना (*सिस्टोमस सराना)* -18,000 प्रजातियों को नमूने के तौर पर लिया गया। इन प्रजातियों की वृद्धि छह सप्ताह की अवधि में 10 ग्राम तक देखी गयी। आम्फान चक्रवात के दौरान, बाढ़ आने से अधिकतर पेन संरचना नष्ट हो गई है। पेन में फिर से पालन करने के लिए, उसे मरम्मत करके उसमें नए बीजों के लिए संस्थान ने चामता मछुआरों को अनुसूचित जनजातीय कार्यक्रम के तहत 4.5 टन मछली आहार वितरित किया। इससे बीज उत्पादन की लागत कम हो जाएगी और बील में मछली उत्पादन में वृद्धि होगी जो बदले में मछुआरों की

आजीविका में सुधार करेगा। अनुमानतः संस्थान की मदद से इस आर्द्रभूमि से 10 लाख की अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

कोविड -19 लॉकडाउन के दौरान ओडिशा के मत्स्य अधिकारियों को ई-मत्स्य के द्वारा क्षमता निर्माण

संस्थान ने ओडिशा राज्य के मत्स्य अधिकारियों और वर्ल्डफिश-ओडिशा परियोजना के कर्मचारियों को 17 जून 2020 को ई-मत्स्य ऑनलाइन एंड्रॉइड सॉफ्टवेयर के माध्यम से प्रशिक्षित किया। यह कार्यक्रम संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्ग दर्शन में सम्पन्न हुआ। संस्थान ओडिशा-वर्ल्डफिश प्रोजेक्ट का एक तकनीकी साझेदार है, जो परियोजना कर्मचारियों को और राज्य मत्स्य विभाग को तकनीकी सहायता प्रदान करता है। ई-मत्स्य एक इंटरनेट आधारित मछली पकड़ की रिकॉर्डिंग करने का मोबाइल ऐप है। सबसे पहले ऐप इस्तेमाल कर रहे व्यक्ति के मोबाइल नंबर को पंजीकृत करना होगा, जिसके बाद वह ई-मत्स्य ऐप में मछली पकड़ने के आंकड़ों को रिकॉर्ड कर सकेगा। रिकॉर्ड किया गया डेटा केंद्रीय प्रसंस्करण प्रणाली में स्वचालित रूप से रिकार्ड रहेगा। केंद्रीय प्रसंस्करण प्रणाली एक ऑनलाइन प्रणाली है और कोई भी व्यक्ति वेबसाइट से रिकॉर्ड किए गए डेटा तक पहुंच सकता है। रिकॉर्ड किए गए डेटा को आगे के विश्लेषण के लिए वेबसाइट से एक्सेल प्रारूप में डाउनलोड किया जा सकता है। डॉ. दास ने अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र में मोबाइल ऐप के महत्व पर

जोर दिया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री एम. कार्तिकेयन ने प्रतिभागियों को ई-मत्स्य पर प्रशिक्षण दिया और सॉफ्टवेयर से परिचित करने के लिए उन्हें एक डेमो का प्रदर्शन किया। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए जूम प्लेटफॉर्म का उपयोग किया गया था। ओडिशा-वर्ल्डफिश प्रोजेक्ट के स्टेट मैनेजर, डॉ. अरुण पडियार ने ओडिशा-वर्ल्डफिश प्रोजेक्ट की ओर से प्रशिक्षुओं को ओडिशा में आयोजन किया। इस प्रशिक्षण में कुल 26 अधिकारियों (22 पुरुष और 4 महिला) ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2020

योग एक प्राचीन शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास है जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी। वर्तमान में योग को शारीरिक, मानसिक व आत्मिक स्वास्थ्य व शांति के लिए बड़े पैमाने पर अपनाया जा रहा है। आज यह दुनिया भर में विभिन्न रूपों में प्रचलित है और लोकप्रियता में वृद्धि जारी है। इसकी सार्वभौमिक अपील को स्वीकार करते हुए, संयुक्त राष्ट्र ने दिनांक 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया।

हमारे देश में वर्ष 2015 से 21 जून 2015 को प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। । इस दिवस के अवसर पर 192 देशों में योग का आयोजन किया गया। प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर दिल्ली में एक साथ 35985 लोगों ने योग का प्रदर्शन किया, जिसमें 84 देशों के प्रतिनिधि मौजूद थे। इस भारत ने दो विश्व रिकॉर्ड बनाकर 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में अपना नाम दर्ज करा लिया। पहला रिकॉर्ड एक जगह पर सबसे अधिक लोगों के योग करने का बना, तो दूसरा एक साथ सबसे अधिक देशों के लोगों के योग करने का।

इस वर्ष, कोरोना महामारी के कारण सामाजिक दूरी पालन करने को ध्यान में रख कर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2020 का थीम था- 'घर से योग'। अर्थात इस दिन घर पर रह कर अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ योग करना।

इसलिए इस बार हमारे संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2020का पालन एक अलग प्रकार से किया गया। इस दिन सभी संस्थान कर्मियों ने घर पर रहकर इस दिवस का पालन किया। उन्होने अपने पारिवारिक सदस्यों के

साथ योगाभ्यास को वीडियो/चित्रों में कैद किया और कार्यालय को ईमेल द्वारा भेजा। संस्थान कर्मियों के वीडियो/चित्रों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को भेजा गया।

अनुसूचित जन जातीय कार्यक्रम के तहत आजीविका वृद्धि के लिए पश्चिम बंगाल के बेलेडांगा आर्द्रभूमि के अम्फन से प्रभावित मछुआरों का समर्थन

संस्थान ने अनुसूचित जनजाति उप योजना (एससीएसपी) के तहत निदेशक डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में मछुआरों के उत्पादन में वृद्धि और आजीविका सुधार के लिए पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना के बेलेडांगा आर्द्रभूमि में कार्य किया है। वर्ष 1958 में बेलेडांगा मछुआरों सहकारी समिति का पंजीकरण किया गया था। सहकारी समिति में 176 सदस्यों की संख्या है, जिसमें से 170 अनुसूचित जाति (एससी) से संबंधित हैं, और शेष अनुसूची जनजाति के हैं। संस्थान ने इन मछुआरों को तकनीकी सहायता प्रदान की और मछली के बीज, मछली आहार और अन्य मत्स्य पालन के उपकरण वितरित किए। आर्द्रभूमि के उचित प्रबंधन में रुचि लेने के लिए इन मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर 5 दिनों के लिए प्रशिक्षण दिया गया और उन्हें पेन कल्चर के पहलू से अवगत कराया गया। संस्थान ने मछली के बीज की लागत को कम करने के लिए एक सह-प्रबंधन मोड में बेलेडांगा आर्द्रभूमि में इन सीटू बीजों के लिए पेन कल्चर का प्रदर्शन किया। बेलेडांगा आर्द्रभूमि में स्थापित चार सिफ़री एचडीपीई पेन में फरवरी, 2020 में लगभग 36300 भारतीय प्रमुख

कार्प (लगभग 10 ग्राम) स्टॉक किए गए थे। 8 सप्ताह के बाद, मछली 30 ग्राम के आकार तक बढ़ गई है। पेन से 25,830 उन्नत अंगुलिमीनों को आर्द्रभूमि में पालन आधारित मत्स्य पालन के लिए स्टॉकिंग इनपुट के रूप में छोड़ा गया। लॉकडाउन के दौरान मछुआरों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। एक तुलनात्मक अध्ययन में यह देखा गया है कि सामाजिक स्थिति और कोविड निवारक मानदंडों के कारण, लॉकडाउन के दौरान मत्स्य पकड़ कम हुई है।

कोविड के दौरान ओडिशा के बाघुआ जलाशय के मछुआरों के लिए संस्थान द्वारा पालन आधारित मत्स्य संवर्धन कार्यक्रम

ओडिशा के नयागढ़ जिले के ओडोगांव ब्लॉक में स्थित बघूआ जलाशय पर गाँव के मछुआरे निर्भरशील हैं। बाघुआ एक छोटा जलाशय है जिसका क्षेत्रफल 122 हेक्टेयर और उत्पादन 7 टन है। नयागढ़ जिले को ओडिशा के राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है क्योंकि बघेला वंश के राजा सूर्यमणि मध्य प्रदेश से तीर्थयात्रा करने पुरी आए थे और नयागढ़ में अपना राज्य स्थापित किया था। संस्थान ने निदेशक, डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में पेन में पालित मूल स्थान से प्राप्त मत्स्य बीज के जरिए भारत के छोटे जलाशयों में मत्स्य विकास के लिए एक नवीन प्रयास शुरू किया गया है। ओडिशा में बाघुआ जलाशय का चयन ओडिशा के मत्स्य विभाग और रघुनाथ प्राथमिक मत्स्य सहकारी समिति के परामर्श से एससीएसपी कार्यक्रम के तहत किया गया था। मत्स्य सहकारी समिति की स्थापना वर्ष

1987 में हुई थी, जिसमें 52 अनुसूचित जनजाति के सदस्य थे। समिति के साथ एक प्रारंभिक बैठक में यह निर्णय लिया गया कि संस्थान जलाशय के मत्स्य विकास के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करेगा। संस्थान ने अनुसूचित जनजातीय कार्यक्रम के तहत इस जलाशय के उत्पादन को पहले वर्ष में बढ़ाकर 21 टन कर दिया गया। संस्थान ने बघुआ जलाशय के मछुआरों को क्षमता निर्माण प्रशिक्षण प्रदान किया और उन्हें समुदाय आधारित मत्स्य पालन पर एक एक्सपोजर भी दिया । इस महीने संस्थान ने सामुदायिक भागीदारी से जलाशय में 0.5 हेक्टेयर जगह में पेन की स्थापना की। बघुआ के मछुआरों को

अनुसूचित जनजातीय कार्यक्रम के तहत आउटबोर्ड इंजन वाली स्पीड बोट प्रदान की गई है। अनुमानतः मछली के बीज से जलाशय में अतिरिक्त 14 टन उत्पादन हो सकेगा, जिससे बाघुआ के मछुआरों के लिए जलाशय से 16.80 लाख की अतिरिक्त आय प्राप्त होने की संभावना हैं। कार्यक्रम की अनुप्रेरणा संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के.दास द्वारा किया गया था। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. पी.के. परिदा, श्री हिमांशु स्वाइन और डॉ. लिआंथुमलिया द्वारा किया गया।

संस्थान में स्वच्छता अभियान की पहल

दिनांक 27 मई 2020 को संस्थान मुख्यालय में 3 बजे एक स्वच्छता अभियान चलाया गया। विनाशकारी चक्रवात अम्फान से संस्थान के परिसर में कई पेड़ गिर गए और इसी कारण संस्थान को स्वच्छ बनाने के लिए सभी कर्मचारियों ने इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए सभी कार्मिकों ने अलग अलग छोटे छोटे समूह में विभाजित हो के और सामाजिक दूरी के निर्देशों को मानते हुए इस अभियान

में भाग लिया। सभी ने मास्क पहना। यह कार्यक्रम संस्थान के निदेशक महोदय की प्रेरणा और देखरेख में संभव हुआ ।

महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 29 मई 2020 ने अलंकारी मछलियों के विपणन और प्रजनन प्रबंधन की स्थिति पर राष्ट्रीय वेबिनार पर एक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 10 जून, 2020 को अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधन (ECIFR) पर विशेषज्ञ समिति की पहली बैठक में भाग लिया ।
- संस्थान के निदेशक और अन्य वैज्ञानिकों ने दिनांक 11 जून 2020 को उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान) द्वारा बुलाई गई बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और अन्य वैज्ञानिकों ने दिनांक 12 जून, 2020 को एग्रोविजन फाउंडेशन द्वारा आयोजित वेबिनार, "चैलेंजेस, ओप्पोरचुनिटी एंड फ्यूचर ऑफ़ इनलैंड फिशरीज" में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिक ने दिनांक 12 जून 2020 को जोनल टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट सेंटर, आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन द्वारा आयोजित वेबिनार, “इंटरप्रेन्योरशिप ओप्पोरचुनिटी इन इनलैंड फिशरीज-ए क्राइसिस मैनेजमेंट सपोर्ट टू ओवरकम दी इम्पैक्ट ऑफ़ कोविड-19 पान्डेमिक” में भाग लिया। इस वेबिनार का उद्देश्य कोविड-19 महामारी के प्रभाव को दूर करने के भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर पर विचार विमर्श करना था।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 13 जून, 2020 को केंद्रीय कृषि विश्व विद्यालय और AIASA, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कोविड-19 युग के दौरान उत्तर पूर्व भारत में कृषि विकास के लिए रणनीति और नीति हस्तक्षेप पर राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लिया
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 15 जून, 2020 के दौरान भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन की कार्यकारी समिति की बैठक में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिक ने दिनांक 16 जून 2020 को आईसीएआर-एनआईएपी द्वारा आयोजित वेबिनार "एग्रीकल्चर डयूरिंग कोविड 19, इकोनोमिक पैकेज एंड रिफॉर्म्स" में भाग लिया।

प्रशिक्षण

संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 18-19 जून 2020 को कॉलेज ऑफ फिशरीज, लिम्बुचेर्रा, त्रिपुरा द्वारा आयोजित पांच दिवसीय वेबिनार में आमंत्रित व्याख्यान दिया। इस वेबिनार का विषय, “कोविड 19 एंड फिशरीज : पोटेंशियल इम्पेक्ट्स, मिटीगेशन एंड मैनेजमेंट ” था

सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल की ओर से आप समस्त पाठकों को जुलाई, 2020 का यह अंक प्रस्तुत है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए आप सभी को हार्दिक धन्यवाद। आशा है, आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा।

धन्यवाद

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्था,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है